पद १२९

(राग: यमन कल्याण - ताल: त्रिताल)

देई मला इतुके रघुराया। मित उपजो तुझिया गुण गाया।।ध्रु.।। सत्संगत सद्गुरुची सेवा। निशिदिनी घडो मजलागीं देवा।।१।। स्वधर्म घडो तो अधर्म नसावा। तूं सर्वांभूती ठसावा।।२।। षड्वैरीचा संग नको रे। मन वैराग्य वनांत भकोरे।।३।। माणिक म्हणे प्रभु हेची देई। प्रीति जडो तुझिया निजपायां।।४।।